नूतन कन्या महाविद्यालय नाम से सन् 1963–64 से स्थापित कन्या महाविद्यालय वर्तमान में शासकीय महारानी लक्ष्मीबाई कन्या स्नातकोत्तर महाविद्यालय, किला भवन, इन्दौर के नाम से पहचाना जाता है। सन् 1963–64 में ही महाविद्यालय में हिन्दी विभाग का शुभारम्भ हुआ। प्रथम विभागाध्यक्ष प्रो. कुमुद केलकर रहीं फिर पिछले 50 वर्षों में हिन्दी के मूर्धन्य विद्वान हिन्दी के विभागाध्यक्ष रहे। क्रमशः डॉ. नेमिचन्द्र जैन (संपादक – तीर्थकर), डॉ. विलास गुप्ते (नाटककार, कहानीकार, समीक्षक), डॉ. आशा पाण्डे (समीक्षक, लेखक), डॉ. कुसुमलता श्रीवास्तव, डॉ. नरेश्वरप्रसाद देहुलिया, प्रो. चन्द्रशेखर पाठक, डॉ. पद्मा सिंह (कवयित्री), डॉ. स्नेहलता श्रीवास्तव एवं डॉ. संध्या गंगराड़े विभागाध्यक्ष रहे। वर्तमान में डॉ. चंदा तलेरा जैन विभागाध्यक्ष है।

हिन्दी प्रेमी डॉ. सुकुमारी चतुर्वेदी के प्रयासों से 1986 में स्नातकोत्तर कक्षाओं का प्रारंभ हुआ। तत्पश्चात् हिन्दी की प्राध्यापक डॉ. अन्नपूर्णा राय, डॉ. मंजुला चौबे एवं डॉ. चन्द्रकिरण अग्निहोत्री प्राचार्य रही।

वर्तमान में महाविद्यालय के हिन्दी विभाग में चार प्राध्यापक **डॉ. चंदा तलेरा जैन, डॉ. संध्या गंगराड़े, डॉ. पुष्पा शाक्य एवं डॉ. शोभना जोशी** अपनी सेवाएँ प्रदान कर रहे हैं तथ इनके समवेत प्रयत्नों से विभाग निरंतर समृद्ध हो रहा है।

हिन्दी विभाग के सभी प्राध्यापक महाविद्यालय के साथ ही अन्य महाविद्यालयों तथा सार्वजनिक बौद्धिक कार्यक्रमों में अपनी प्रतिभा की विशिष्ट पहचान रखते हैं। डॉ. चंदा तलेरा जैन, डॉ. संध्या गंगराड़े, डॉ. पुष्पा शाक्य एवं डॉ. शोभना जोशी विषय विशेषज्ञ के रूप में निरंतर अपनी सेवाएँ दे रही हैं। विभाग में पीएच.डी. हेतु छात्राओं को

मार्गदर्शन दिया जा रहा है। सभी प्राध्यापक छात्राओं को प्रतियोगी परीक्षाओं हेतु भी मार्गदर्शन दे रहे हैं। साहित्य लेखन में भी छात्राएँ प्राध्यापकों की दक्षता का लाभ लेती हैं। महाविद्यालय की सभी छात्राओं की समस्याओं के समाधान एवं मार्गदर्शन हेतु विभाग सदैव तत्पर रहता है।

महाविद्यालय के उद्देश्यों के साथ हिन्दी विभाग भी कुछ उद्देश्यों को लेकर सतत् सक्रिया है।

उद्देश्य –

(1) भाषिक दक्षता का विकास।
(2) सम्प्रेषण कला में निपुणता।
(3) साहित्यिक अभिरूचि का विकास।
(4) रोजगारोन्मुखी दक्षता का विकास।
(5) छात्राओं की अन्तर्निहित क्षमताओं का विकास।
(6) सांस्कृतिक एवं राष्ट्रीय चेतना का संवर्द्धन।
(7) स्वास्थ्य एवं पर्यावरण चेतना का विकास।
(8) सशक्तिकरण एवं स्वावलंबन की प्रेरणा।